मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख • पूर्ण अंक १९५ • अक्टुबर -२०२३

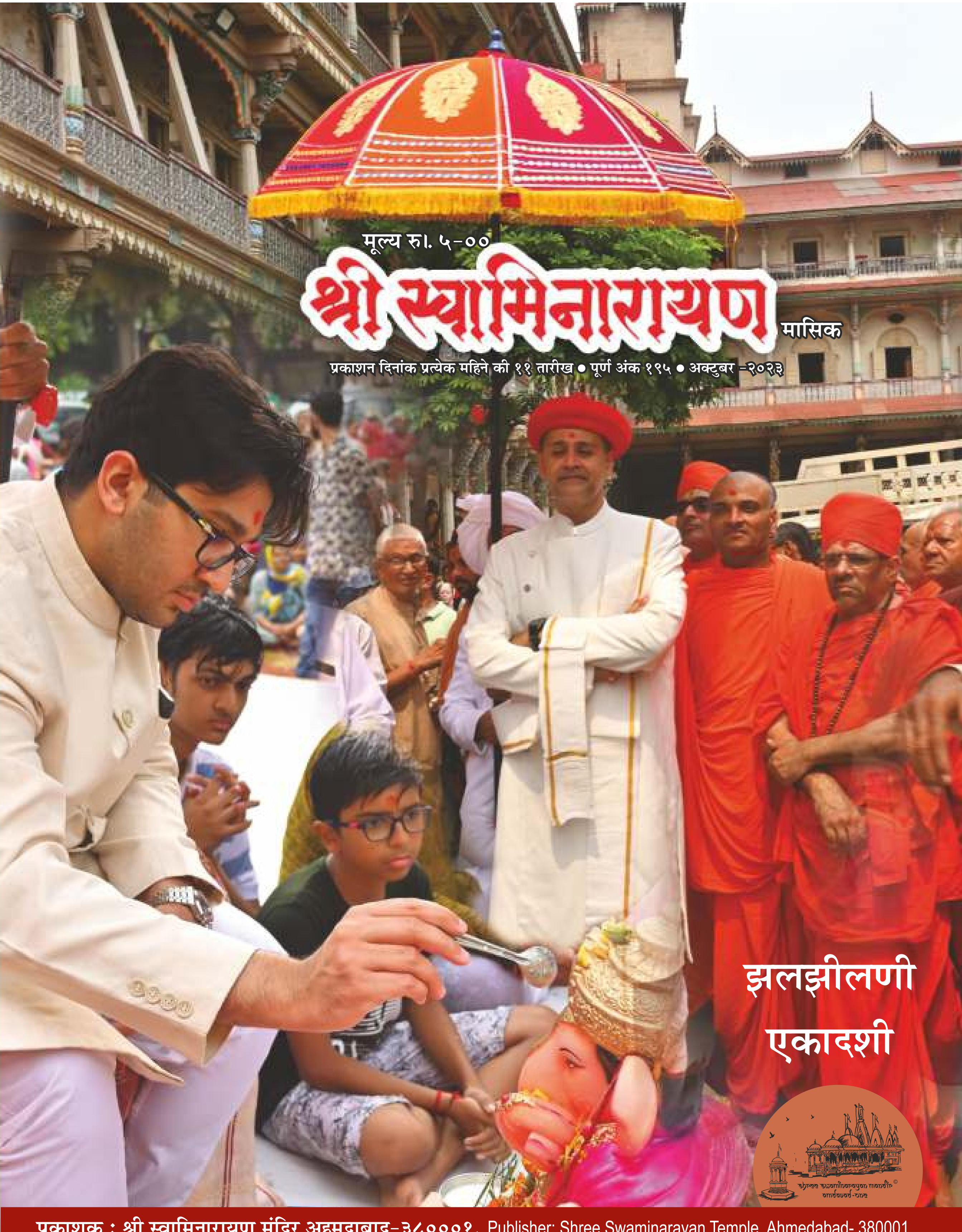

झलझीलणी एकादशी

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१. Publisher: Shree Swaminarayan Temple, Ahmedabad- 380001

चेरीहिल (अमेरिका) मंदिर में प.पू. बिंदुराजा के पास से राखी बंधवाते और सभा में आशीर्वाद देते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

बोस्टन (अमेरिका) मंदिर में ठाकुरजी का षोडशोपचार करते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

कोलोनिया (अमेरिका) मंदिर में ठाकुरजीकी आरती करते प.पू. आचार्य महाराजश्री।

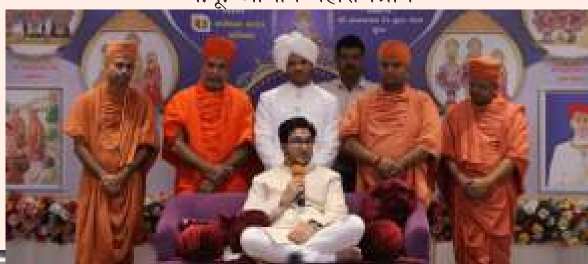

सुरत में ठाकुरजी की आरती करते और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के शिबिर में आशीर्वाद देते प.पू. लालजी महाराजश्री।

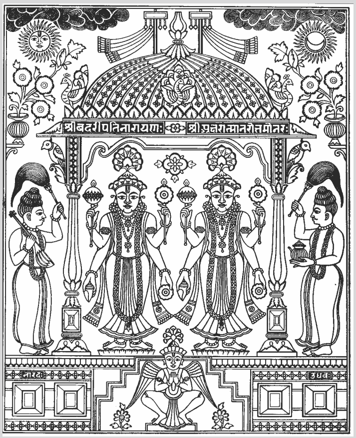

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स : २७४१९५९७
www.swaminarayanmuseum.com

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info
पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १७ ● अंक : १९५ ● अक्टुबर-२०२३

अ नु क्र म णि का

०१. अस्मदीयम् ०४

०२. प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री,
प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा ०५

०३. संतानो के नाम के नियम ०६

०४. प.पू. आचार्य महाराजश्री के मुख से अमृत बचन ०८

०५. माता-पिता की सेवा १२

०६. पानसर १३

०७. श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से १४

०८. भक्ति सुधा १५

०९. सत्संग समाचार १७

अस्मदीयम्

हमें प्रतिदिन चिंतन करना है कि ''मैं आत्मा हूँ और जो साक्षात् भगवान मिले है वे परमात्मा है'' । मैं यह शरीर नहीं हूँ इस तरह का विश्वास आये तो समझे ज्ञान का उदय हो रहा है । ज्ञान से अंधकार दूर होता है । लेकिन इस ज्ञान के साथ भक्ति और वैराग्य जुडी हो ।

केवल ज्ञान सूक्ष्म अहंकार पैदा करता है । केवल भक्ति ही नही अच्छे ज्ञान के साथ भक्ति उत्तम होती है । भक्ति अर्थात क्या ? परमात्मा के साथ अनन्य जुडाव । परम प्रेम, निःस्वार्थ स्नेह ही भक्ति है । ''मै'' के स्थान पर 'हरि' केन्द्र में रहे । तो समझ ले की भक्ति आ गयी है । हमें परीश्रम करते रहना चाहिए कि हमे अपने कुल पुत्र और विषय में रस है या महाराज के प्रति प्रेम है ?

भक्ति करने के लिये कई बातो पर ध्यान देना चाहिए । देखा-देखी या किसी को दिखाने के लिये भक्ति नही की जाती है । किसी लालच या माँग के लिये भक्ति का सहारा तो नही लिया गया है ।

भक्ति में प्रतिदिन वृद्धि होनी चाहिए । इसके लिये सत्संग करते रहना चाहिए । भक्ति से हमारा हृदय निर्मल होता है । इससे शांति और आनंद मिलता है । लेकिन सभी विषयो में महाराज की प्रधानता रहनी चाहिए ।

दिवाली तथा उत्सवो के दिन आ रहे है । नरनारायणदेव और पूज्य आचार्य महाराजश्री का आशीर्वाद हमेशा प्राप्त होता रहे । ऐसी प्रार्थना ।

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी पुरुषोतमप्रकाशदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

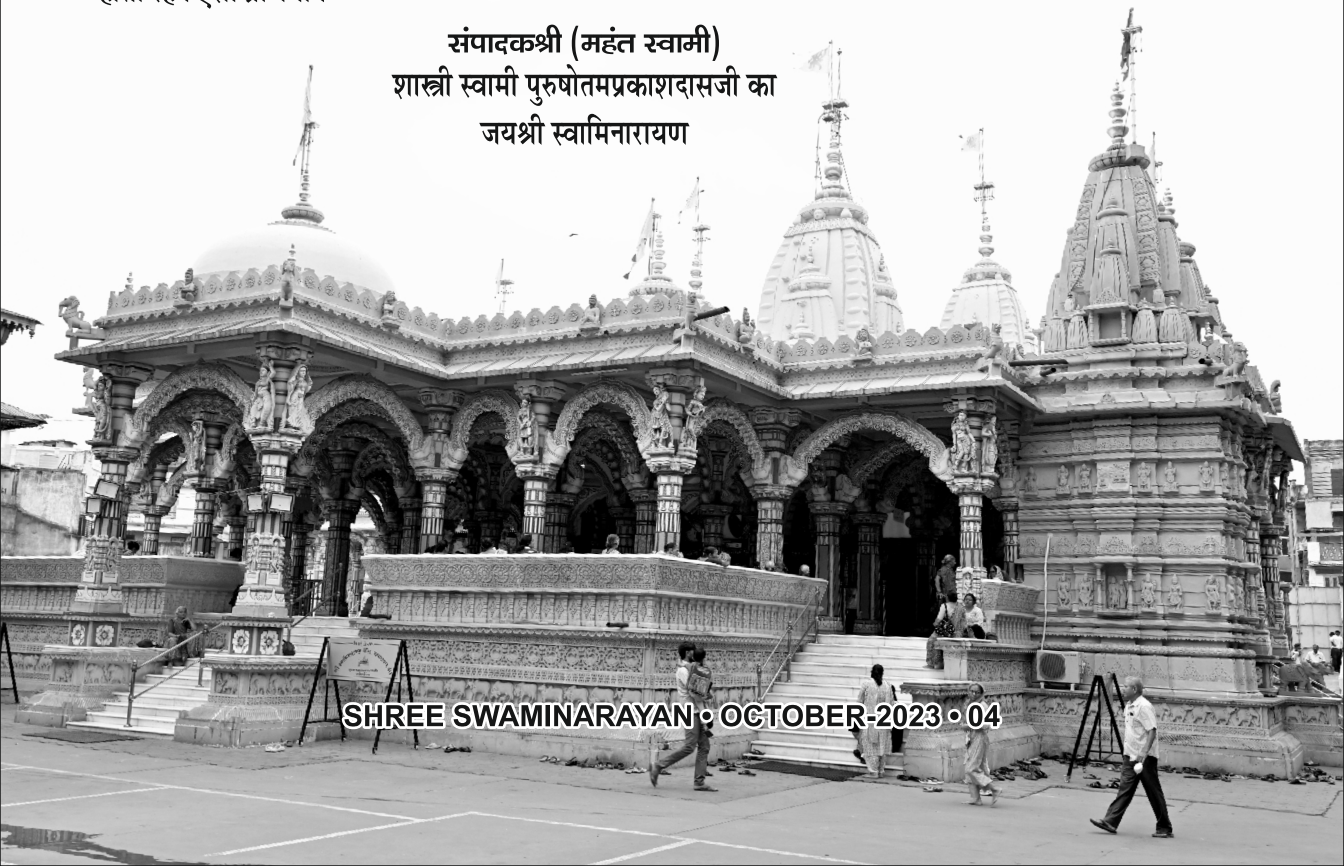

श्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कार्यक्रम की रुपरेखा (सितम्बर-२०२३)

३ सिंधुभवन (बोडकदेव, शिलज, सायन्स सीटी अने शिलज विस्तार) मे आयोजीत पारायण के अवसर पर पधारना।

५थी१५ श्री स्वामिनारायण मंदिर बोल्टन (यु.के.) स्वर्ण जयंती पाटोत्सव (५० वाँ पाटोत्सव) के अवसर पर पधराना। वहाँ से श्री स्वामिनारायण मंदिर सिनेमेन्सन (अमेरिका) पधारना। वहाँ से श्री स्वामिनारायण मंदिर बोस्टन (अमेरिका) पधारना।

१९ भुज (कच्छ) प.भ. श्री लक्ष्मणभाई भीमजी राघवाणी (बलदीया-कच्छ) समाचार लेने के लिये पधराना।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी के वरघोडा पर पधारना।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रति माह आयोजित पून सभा में पधारना।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०२३)

२ सिंधुभवन (बोडकदेव, शिलज, सायन्स सीटी अने शिलज विस्तार) मे आयोजीत पारायण के अवसर पर पधारना।

५थी१० श्री स्वामिनारायण मंदिर बोल्टन (यु.के.) स्वर्ण जयंती पाटोत्सव अवसर पर पधारना।

१३ अ.नि. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी के गुणानुंवाद सभा में पधारना अहमदावाद श्री स्वामिनारायण मंदिर।

२३ सुरत श्री नरनारायणदेव युवक मंडल आयोजीत शिबिर में पधारना।

२६ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर जलझीलणी एकादशी को श्रीगणपतिजी का वरघोडा के अवसर पर नारणघाट पर पधारना।

२९ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में प्रति माह आयोजित पून सभा में पधारना।

संतानो के नाम के नियम

– साधु पुरषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

आज हम बच्चो के नामकरण के उपर बात करेगे । अपने पुराण और शास्त्रो के सिद्धान्त अनुसार बालक का जन्म होने के बाद उसका नामकरण विधि सोलह संस्कारो में एक माना जाता है । यह एक पवित्र संस्कार है । इस अवसर पर विद्वान ब्राह्मण को बुलाकर शास्त्र अनुसार देवताओ की पूजा करके बालक के जन्म का समय, स्थिति नक्षत्र, राशि, ग्रह, सूर्य, चंद्र, तिथि, वार, घडी, स्थान, माता-पिता का कुल गोत्र वर्ण सभी का संकलन करके उसकी राशि तथा लग्न निश्चित किया जाता है । इस पर राशी का अक्षर जातक का नाम परिवार के बडे लोगो के द्वारा आपसी सहमति से प्रिय नाम रखा जाता है । उसमें गुरु औऱ पुरोहित की अनुमति ली जाती है । साथ ही साथ जातक की माँ उपनाम भी रखती है । जातक के नाम के साथ उसके पूर्व जन्म के संचित प्रारब्ध तथा उसके संस्कार कुल, गोत्र, देश, वर्ण, ज्ञाति के रिवाज भी लक्ष्य में रखते है । नाम और रुप एक दूसरे के पहचान होते है । 'नाम' गुण और रुप को बताता है । जातक के 'नाम' में उसकी शक्ति सामर्थ्य कर्म और धर्म जुडा रहता है । जातक के नाम में जनम-जन्मान्तर की छिपी पहचानह होती है । इस लिये जातक का नाम काल्पनिक एवम् मनस्वी रुप में नही रखना चाहिए । नाम रखने की व्यवस्था अपने धर्मशास्त्रो में जो कही गई है । यहि जातक कन्या हो तो ? उसका नाम नदियो (सरिता) के नाम राशिका रखना चाहिए । हमारे देश में ९९९ नदियो प्रवाहित अवस्था में है । उन नदियो के नाम में से लग्न और राशि के अक्षर के साथ शब्द संख्या के साथ मिलाकर परिवार के बडे लोग नामकरण करते है । जैसे, गंगा, यमुना, सरस्वती, नर्मदा, काबेरी, कृष्णा, गोदावरी, क्षिप्रा, तापी, साबरमती, मही, सिन्धु, कृष्ण, ब्रह्मपुत्र, अलंकनंदा, काली, भागीरथी, बनास, भादर, अंबिका, महा, झेलम, कोशी, व्याला, बैतरणी, तुंगभद्रा, मांडली, मलेलस, सरयू, मनोरमा, रुपेण इत्यादि है । ब्रह्मपुराण में सभी नदियों का नाम वर्णित है । सनातन धर्म में हिन्दु परम्परा के अनुसार देवी शक्ति जगदम्बा के जितने भी अवतार हुए है । ये भी नदियो के नाम ही है । इस प्रकार कन्या का नाम को इसी आधार पर रखना चाहिए । भले आप विदेश या नये जमाने के हो । नाम में अनंतशक्ति होती है । जिस नदी के नाम का चयन करेगे उसका ऐश्वर्य पुण्य, आदि पुत्री के जीवन में अवश्य आयेगी ।

जातक यदि पुत्र हो तो उसका नाम देव, नक्षत्र, दिग्पाल तथा परमब्रह्म परमात्मा के १०८ तथा १००८ सहस्त्र नामावली में से राशि के उपर रखा जाता है । पुराण-शास्त्र, जनमंगल नामावली में से जो प्रिय हो वह नाम रख सकते है । इसमें से छोटे-बडे नाम को चयन कर सकते है । आज तक अपने पूर्वज भगवान के उपर ही नाम रखते रहे है । अपने पूर्वजो के नाम पर भी नाम रखा जा सकता है । धर्मनंदन, भक्तिनंदन, यशोदानंदन, नंदनंदन, रघुनंदन, कौशल्यानंदन इत्यादि । पूर्व अवतारो के नाम भी शास्त्र में लिखे गये है ।

घर के परिवारवाले, सगे-सम्बन्धि, देव-देवियो, भगवानके नाम पुत्र-पुत्री के नाम का जप कते है । निश्चय माध्यम पुत्र एवम् पुत्री ही हो लेकिन सम्बंध भगवान देव देवियो के साथ है । मनुष्य के पूर्व जन्म के पाप भगवान

का नाम लेने से आसानी से कह जाता है। यह भक्ति घर में ही हो जाती है। घर पवित्र हो जाता है। काया निर्मल हो जाती है। मन सफल हो जाता है। वर्तमान कलियुग में यह सद्गुण कहा जायेगा। केवल नाम जप से इस युग में मनुष्य पाप से मुक्त हो जाता है। आप देखे हमारे पूर्वज कितने बुद्धिशाली थे।

श्रीमद् भागवत के छठवे स्कंध में अजामिल नामक विप्र की कथा भगवान वेदव्यास नारायणने लिखा है। अजामिल के छोटे पुत्र का नाम "नारायण" था। उससे वह अधिक प्रेम करते थे। जब वे अठ्ठासी वर्ष के हुए तो उनके पास यराज के दूत प्राण लेने आये। कर्म के लेख अनुसार यमराज के दूतो को देखकर डर गये। नारायण-नारायण ऐसा कहकर अपनी सुरक्षा चाहते थे। क्योकि वह अपने पुत्र को बचाने के लिये पुकार रहे थे। वहाँ से भगवान के पार्षद आकर अजामिल की यमदूतो की फाँस से रक्षा किये। उनको जीवनदान दिये। उन्हे वैराग्य उत्पन्न हुआ। शेष जीवन "नारायण" "नारायण" नाम का जप करके मुक्ति प्राप्त किये थे। घर पर बैठकर पाप मुक्त होने का उत्तम उपाय यह है। इस प्रकार जातक कन्या नदी के नाम पर होने पर इकहत्तर पीढियों का कल्याण करती है। हम जब भगवान का षोडशोपचार करते है तो उसमें नदियो का जल अवश्य रखते है। उस समय भूदेव कलश में नाम जप करके गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी आदि नदियो का आहवाहन करते है। पूरे पूजा स्थल शरीर पूजा के सामान को विष्णुरुप बना देते है।

भूतकाल में यदि भूल हुई हो तो इस बात को अवश्य याद रखे। यदि आप कर सकते है तो पुत्र-पुत्री का नामकरण उपर लिखित तथ्य को ध्यान दे। आप के पूर्वज देवी-देवता खुश होगे। और संसार में सफलता मिलेगी। इसमें शंका नही है। यदि श्रद्धा है तो दूसरो को अवश्य यह बात बताये। उसका भी अच्छा होगा। शास्त्रो का सिद्धान्त है। नाम-स्वरुप एक ही है। नाम अजर-अमर होता है। पूर्वजो का नाम लेकर उनके सत्कर्म फल का संकल्प मात्र से अर्पण किया जाता है।

दीपोत्सव कार्यक्रम

चोपडा खरीदने हेतु : आश्विन कृष्ण पक्ष-८ रविवार दि. ०५-११-२०२३ को पुष्य नक्षत्र होने से हिसाब लिखने के रजिस्टर खरीदने का मुहूर्त अच्छा है।

धनतरेस : आश्विन कृष्ण पक्ष-१३ शनिवार दि. ११-११-२०२३ धनतेरस महालक्ष्मी पूजन।

काली चौदश : आश्विन कृष्ण पक्ष-१४ रविवार दि. १२-११-२०२३ श्री हनुमानजी महाराज का पूजन दोपहर ११-३० बजे, समूह शारदापूजन-चोपडा पूजन सायंकाल ७-०० बजे अमदावाद कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण किया जायेगा।

दीपावली : आश्विन कृष्ण पक्ष-३० सोमवार दि. १३-११-२०२३

नूतन वर्ष : कार्तिक शुक्ल पक्ष-१ मंगलवार दि. १४-११-२०२३

मंगला आरती प्रातः ५-00 बजे।
श्रृंगार आरती प्रातः ६-३0 बजे।
गोवर्धन पूजा प्रातः ८-00।
राजभोग आरती प्रातः १0-१0 बजे।
अन्नकूट दर्शन दोपहर १0-00 बजे से ३-३0 बजे तक।

श्रीहरि के ६ठे, ७ वें तथा ८ वें वंशज के हाथों से संपन्न होगा। नूतन वर्ष को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कालुपुर मंदिर में अपनी आफिस में सभी को दर्शन देंगे।

सूचना : समूह शारदा पूजन में लाभ लेने वाले भक्त अपनी बही लाल कलर में कपड़े में पता-फोन-मोबाईल नंबर लिखकर मंदिर की आफिस में ५००/- रुपये भरकर रसीद प्राप्त करलें।

प.पू. आचार्य महाराजश्री के मुख से

अमृत बचन

- संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापुनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) समूह महापूजा के अवसर पर दि. २०-८-2023 : महापूजा की महिमा कहे उतना कम है । मनुष्य का मन चंचल होता है । हम प्रातः जो दैनिक पूजा करते है । तो माला फेरते समय मन कही और चला जाता है । ऐसा होता है न ? सभी को होता है । मुझे भी होता है । मुझे लगता है आप लोगो से आज मिलना है । देव का दर्शन करने अना है ।यही जो कमी रही जाती है । वह महापूजा से पूरी होती है । महाराज अपने आश्रितो को वर्ष में एकबार या कई बार महापूजा करने का आदेश दिये है । आप सभी को धन्यवाद । महाराज आप सभी पर कृपा करे ऐसी प्रार्थना ।

बापजी सदैव कहते है, आप भी सभा में सुने होगे । वजन बढ़ना नही चाहिए । भजन घटना नही चाहिए । इस लिये हमने वजन कम किया है । बात इस लिये कह रहा हूँ मैं रसोई घर में देखकर आया हूँ । आपके लिये लड्डू तैयार है । खाईयेगा लेकिन पित्त नही बनना चाहिए । महंत स्वामी से बोले कि सब्जी में तेल अधिक है । सब्जी में तेल है कि सब्जी ही तेल है ।

हम इस मंदिर से सुख प्राप्त कर रहे है । बहनो के लिये सुंदर मंदिर है । अब जब अपने ही भाई-बहन, बच्चे-बच्चियाँ नये निकोल क्षेत्र में रहने गये है । उस तरफ काफी समय से मंदिर के लिये संकल्प बना था । क्योकि जो सुख हम सभी ले रहे है वह सुख सबको मिलना चाहिए । यह विचार ही कर सकता है । पुरानी कहावत है कि पशु कभी भला नही करता है । स्वयं घास चर कर आ जाता है । वह दूसरे केलिये घास-चारा नही लाता है । मनुष्य अपने लिये भी करता है । और दूसरे के लिये भी करता है । निकोल के लिये भी विचार था । वह उत्साह हम आज देख रहे है । महाराज नंद संतो को आज्ञा देते थे । मनुष्य का भला करके आना मनुष्य नही मिले तो वृक्ष का भला करना । जिससे जीव का भला होगा । किसी का भला हो । ऐसी सोच रखनी चाहिए । उसे प्रभावी जीव चाहिए । यह समप्रदाय की नींव है । तभी टीका चंदन का लाभ प्राप्त होगा । टीका लगाकर किसी का अहित करे तो टीका लगाने का क्या अर्थ है ? हम किसी का भला सोचे । गुणयुक्त वृद्धि रखे । तो महाराज के सिद्धान्त की वृद्धि होगी ।

महाराजने नव मंदिर बनवाये थे । महाराज कहे है कि त्याग का पक्ष बडा करके उपासना करना अच्छा है । हमने ये मंदिर बनवाये है । यह एक बड़ा कथन है । इससे पूर्व किसी ने यह कथन नही कहा है । यही महराजा की सर्वश्रेष्ठता है । कर्म शक्ति मंदिर के रजत जयंती महोत्सव में एक वृद्ध खडे हुए । बोले हमें इतनी सेवा करना है । कहाँ पर करुं ? पूरे गाँव की सेवा करते है तो निकोल में ही प्रयोग करे । कहावत है कि ''घर का बच्चा भूखा रहे और उपाध्याय जी को आटा दे ।'' सर्व प्रथम बच्चो का हित करे । बाद में दूसरे का हित करे । शेष मंदिर में संकल्प कर दे । जहाँ जमीन

सम्पादित हो गयी है । वहाँ के वृद्धो के मध्य मैं बैठा था । वह वृद्ध तैयारी दिखा रहे है । यह अत्यधिक अद्‌भूत है । अपने जगह निश्चित हो गयी हो । काम भी चल रहा हो । वह जगह मंदिर हेतु देना त्याग की बात है । यह अपने सम्प्रदाय की विशेषता रही है । संतो के साथ हरिभक्तो का भी त्याग है । हम गाँव-विदेश में जाते है । तो गुण गान होता है । महाराजश्री और संत लोग पधारे है । दूसरे के लिये अपनी सुविधा छोडना यह अतिशय त्याग का लक्षण है । अपने जीवन शैली से समाधान कर लेते है । समय का त्याग, पैसा का त्याग, मन, बुद्धि, हृदय की भावना यह हमें इस सम्प्रदाय में मिली है । यह गुण हमारे अंदर आये है । दूसरी जगहो पर यह दिखाई नही देता है । दूसरी जगह पर ले-ले होता है । महाराज स्वयं तपस्या किये है । वनविचरण करके हम सभी को बताये है कि जो छोडेगा वही प्राप्त करेगा । यह एक बड़ी बात है । यह अपने सम्प्रदाय मेंदिखाई देता है । कोई छोडना चाहता है ? आप ही सोचे । एक इंच जगह के लिये हत्या कर देते है । थे हरिभक्त धन्य है जो भूदान करते है।

यहाँ आने पर एक संकल्प आया । मुझे नही हुआ । महाराजने प्रेरणा दी है कि निकोल नूतन मंदिर में बीच में घनश्याम महाराज तथा उनके दोनो तरफ नरनारायणदेव और लक्ष्मीनारायणदेव प्रतिष्ठित किये जाये । भगवान में भेद नही है । यह सत्य कह रहा हूँ । भगवान में जिसने भेद किया है । उससे तो राक्षस भी अच्छे है । उससे गंद्रा कोई व्यक्ति नही हो सकता है । भगवान में भेद करने वाला कौन ? हमारे पास भगवान में भेद करने की क्षमता है ? आप सोचे जो महाराजने नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा किये है । कई लोग नरनारायणदेव को मेरा... सभी हमारे ही है । कोई तो बोलता होगा कि कोबा सर्कल के सभी अपने हरिभक्त है । वहाँ पर हमने कहाँ हमें गोपीनाथजी की प्रतिष्ठा करना है । भगवान जैसा भगवान बैठे है, राजा का होकर कंगाल रहे ? संकल्प करने से क्या नहि हो सकता है । हम लोग किसके कारण से सुखी है ? भगवान मिले है इस लिये । यदि ये भगवान नही मिले होते तो हम किसी को कोने में हल चलाते होते । या कही पर दैनिक मजदूरी करते होते ।

खेत की सिंचाई करने वाले को ज्ञात होता है कि सूखे क्षेत्र में कैसे नाली बनाकर पानी ले जाते है । इसी प्रकार मेरे भी सिद्धान्त है कि नरनारयणदेव के कोठार में जो धन आता है । उसका उपयोग कहाँ पर करना है । यह देव हित में उपयोग किया जाता है । आप जो देते है । वह आप की सुविधा हेतु प्रयोग में लाया जाता है । कही खराब जगह नही प्रयोग होता है । छपैया अभी जो लोग जाकर आये होगे । वह अवश्य देखे होगे । यह कैसे हुआ ? मंदिर के कोठार से दिया गया था । शेष हरिभक्तो ने विशेष सेवा लिखवाये है । अहमदाबाद का भी कार्य होगा । पार्किंग की सुविधा भी होगी । ट्रेफिक परेशानी नही होगी ? सब कुछ देव के बल से ही होगा । भगवान के स्वाभिमान से कहता हूँ । यह सब अच्छे से भजन हो इस लिये होगा । मुझे इसमें रस है । जो देव का है । और जो देव है उसमें भेद नही है । वह

अहमदाबाद देश के हरि मंदिरो के लिये अन्नकूट

प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा से अहमदाबाद देश के गाँव तथा शहर के कोई भी हरि मंदिर में दिवाली, नववर्ष के लिये यदि अन्नकूट बनवाना हो तो अपने कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा बनाया जायेगा । जिस हरिभक्त को जरुरत है । वह निम्नलिखित नम्बर पर सम्पर्क करके पंजीकृत हो सकता है।

सम्पर्क : कालुपुर मंदिर कोठार कार्यालय

कोठारी बालु स्वामी : ९४२७०७०३७१ ● सुरेशभाई पटेल : ९१७३०८९०३०

नरनारायणदेव का होना चाहिए । गोपीनाथजी महाराजश्री का हो, लक्ष्मीनारायणदेव का हो । देव के लिये मै खडा हूँ यह सत्य है। यह बल आप देते है। और देते रहे । हम भगवान के होकर रहेगे तो निश्चित रहेगे । यह मैं भगवान के बल से बोल रहा हूँ। मेरा बल कुछ भी नही है। बच्चे विदेश जाते है। उन्हे भी मंत्र देते है। कि भगवान का बनकर रहना है।

निकोल में मंदिर के लिये आप सभी सहयोग दे रहे है। पाँच अंक का धन दे यह आवश्यक नही है। जिसकी जो इच्छा हो वही लिखवाये। अब तो रुपया की प्रधानता हुई है। पहले रुपया कहा था ? तब हरि भक्त श्रमदान करते थे। लोग दो दिन से लेकर दो महा की सेवा देते थे। कोई पत्थर लाता था । कोई गारा बनाता था । नंद संत भी श्रमदान देते थे । इस प्रकार मंदिर बने है। हृदय के एक-एक घडकन और भावना से बने है। संसार में कई मंदिर चूना-ईटा से बने है। वहाँ पर आज कौवे उड रहे है। कभी नजर डालियेगा। मंदिर का एक शिखर बनाना छोटी बात नहीं है । कुछ बाते जग जाहिर नही होती है । पत्र से या शास्त्रो से ज्ञात होता है। आनंदानंद स्वामी मंदिर के उपर चढकर शिखर का काम करवाते थे । महाराज काम की चिंता अधिक करते थे । आनंदानंद स्वामीने देखा कि मजदूर थक गये है। काम मन से नही कर रहे है। स्वामीने तिरछी नजर रख दी इससे महाराज थोडा हँस दिये। स्वामी नीचे उतर गये । और पूछे क्यो हँसे ? महारजा बोले आप को देखकर हँसे है। लेकिन क्यो ? बोले ये सभी भी मानव है। भूख लगने पर थकान लग जाती है। आप शक्तिशाली होकर कम में समाप्त कर दिये। इस प्रकार स्वामी तो राज परिवार के थे। यह सुनकर स्वामी भी हँस दिये। इस प्रकार स्वामी तो राज परिवार से आये थे। वह गुस्से को नियन्त्रण में रखे थे । इस प्रकार छोटी-छोटी बातो से बहुत कुछ सीख सकते है।

भगवान और मंदिर को सम्भाल कर रखे । तोडकर सोने की परत लगाना आवश्यक नही है। किसी के पास यदि अधिक धन आ जाता है तो क्या वह अपने पिता को सोने से ढक देता है । भगवान तो भगवान तो भगवान है। हमारे लिये वह सोना है। भगवान के लिये वह द्रव्य ही है। हम मंदिर के लिये और अपनी सुविधा के लिये करते है। दिखावा नही करना है। मंदिर होने पर कल दो लोग संस्कार प्राप्त करेगे । किसी परिवार के जीवन में भगवान आयेगे । जीवन बदलेगा । तो ५० करोड खर्च सार्थक बनेगा। करोडो रुपया न्योछावर है।

महापूजा के पीछे १५-२० बच्चे बैठे देखे थे। दिल को आनंद मिला । आप और आप के वृद्धोने यह कृत्य किया है । यह सत्य कह रहा हूँ । बडे लोग तो बच्चो की अंगुली पकडकर मंदिर की सीढीयाँ चढते है । यह दृश्य देखकर मन खुश हो जाता है। इसके लिये शब्द कम है। यह मै हृदय से कह रहा हूँ। अंततः सब कुछ इन्ही पीढियो के लिये कर रहे है। संसार में लोग श्रमक रते है। किसके लिये ? उनके बच्चे-बच्चियो सुखी हो । बच्चो को प्रेरणा दे । सलाह दे । शेष देव के उपर छोड दे । नूतन मंदिर के लिये

सम्प्रदाय के गौरव

अपने अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश के देवपुरा (खाखरिया) गाँव के श्री नरनारायणदेव और धर्मकुल के निष्ठावान हरिभक्त प.भ. जतीनभाई झवेरभाई पटेल को अहमदाबाद नगर निगम में उप मेयर के पद पर नियुक्त किया गया है। इनकी लगातार प्रगति तथा आप सामाजिक कर्म करके प्रशंसा प्राप्त करे । ऐसी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. बड़े महाराजश्री श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना करते है।

आँकडा बोला जाये यह आवश्यक नही है । सहयोग आवश्यक है । दस रुपये देने पर भी अपनापन लगेगा । यदि हम नया पंखा लाते है । यदि वह मंद गति से चले तो तुरंत गारंटी कार्ड खोजते है । यह सही बात है । अपने कालुपुर मंदिर के राधाकृष्णदेव के आगे का स्तम्भ का इतिहास आप सभी को ज्ञात ही है । एक हरिभक्त ने विचार किया कि चौरासी लाख योनि में कितनी बार बैल बने है। इस बार तो भगवान मिले है । तो भगवान के कार्य के लिये क्यो नही बैल बनू ? यह विचार कर किसान ने बैल का कार्य किया था । पीछे चोट लग गयी थी । रक्त निकल रहा था । नंद संतोने दवा-मलहम लगाकर यही बाँधे थे । इस प्रकार के सर्मपण का भाव आये तो बडी बात है । इसी के उपर सम्प्रदाय का आधार है । नींव भी है । इस संस्कार के साथ हम लोग जीवन व्यतीत करते है।

हम लोगो जैसा भाग्यशाली इस संसार में कोई नही है । बडे से बडा भगवान ऐसे भगवान हम सब को मिले है । हरि को भजते सभी बडे बने । तथा सेवा करें । हमको नही ले जाना है । आप का है । आप को सुरक्षित रखना है । किसी को तनाव नही रखना है । समय पर कर दे । नही तो रोना रोया करते है । शक्ति अनुसार ही दे । शक्ति से कम नही दे । यह महाराज ने कहा हा है । मैं नही कह रहा हूँ।

अंत में धर्मादा की बात है । शिक्षापत्री में धर्मादा की बाते की गई है । इस आज्ञा का का अनादर आचार्य भी नही कर सकते है । यहाँ नही यहाँ दे इस तरह का व्यवहार अच्छा नही है । यहाँ पर सब देव के लिये होता है । दस्तावेज देव का है । अमेरिका, आस्ट्रेलिया, कनाडा इत्यादि देशो में जहाँ पर देव का मंदिर है । वहाँ पर भक्त धर्मादा देते है। कोई परेशानी नही है । यहाँ पर दे । यह पूछने मत आये । निकोल नूतन मंदिर का दस्तावेज नरनारायणदेव का है । इसमे कुछ गलत नही है । मैं इसे बदल नही सकता हूँ । मेरे पिता बापजी भी नही बदल सकते है । सात पीढी में कोई बदल नही सकता है । जो परिवर्तन कर सकती है । वेये महिलाये कर सकती है । संत महिला हो या आप ही इनसे आप सुरक्षित रहे । यह सही कर रहे है । धर्मादा के पश्चात आप का मन जो कहे वहाँ पर दे । महाराजने कहा है कि मेरी वाणी ही मेरा स्वरुप है । यदि स्वरुप का उल्लंधन करेगे तो भगवान को नही स्वीकार रहे है । मंदिर के लिये सभी एकत्र हुए है । महाराज के आज्ञानुसार मैने बात की थी । कि देव का है । मंदिर बनाने के लिये देव को दे । हम ईधर-उधर खर्च नही करते है।

भगवान के दर्शन से आनंद प्राप्त होता है । भक्तो के दर्शन से आनंद प्राप्त होता है । मै आते ही आप लोगो का हाथ जोडकर दर्शन किया है । बैठने से पूर्व एकबार सभा को देख लू । सहजानंद स्वामी की जय, नरनारायणदेव की जय, लक्ष्मीनारायणदेव की जय, महाराज भगवान अपने है । जब भी जय स्वामिनारायण ।

आश्विन सुद-१५ के ग्रहण पालन हेतु

दि. २८/२९-१०-२०२३ के दिन आश्विन सुद-१५ के दिन चन्द्र ग्रहण है । यह खंडग्रास चन्द्रग्रहण एशिया, पूर्व अमेरिका युरोप, आफ्रिका तथा पूरे भारत में दिखाई देगा । धार्मिक दृष्टि से इस ग्रहण का प्रभाव पावन करना चाहिए ।

अहमदाबाद के स्थानीय समयानुसार ग्रहण का प्रभाव दि. २८-१०-२०२३ तो दोपहर १५ बजकर १३ मिनट ३९ सेकन्ड और बालक, बृद्ध अशक्त के लिये १९ बजे ३८ मिनट १६ सेकन्ड पर प्रभाव रहेगा । चंद्र का उदय १७.५६ पर होगा ।

दि. २९-१०-२०२३ स्पर्श रात्रि १:०५ मिनट, तथा १:४४ मिनट पर मोक्ष रात्रि २:२२ पर होगा ।

माता-पिता की सेवा

- एक हरिभक्त

हम सभी समाचार पत्र में और मीडिया में प्राय: आता है कि अपनी ही संतान वृद्ध माता-पिता को घर से बाहर निकाल देते है। मार-पीट भी करते है। कष्ट भी देते है। अरे ! माता-पिता अपने संतान से छुटकारा प्राप्त करने के लिये नियम (कानून) का संहारा लेते है । कारण वृद्ध माता-पिता कार्य करने में सक्षम नही रहते है । वे अब रुकावट लगते है। जब बच्चे छोटे थे तो क्या कार्य करते थे ? फिर भी माँ-बाप कितना प्यार करते थे । अब वे प्रेम से बालक पालन नही कर पा रहे है ?

अभी एक वैष्णव मित्र की बहू से वार्तालाप हुआ । ''मीना'' अब तो तुम्हारे माता-पिता (सासु-ससरा) लगभग ९० वर्ष के हो गये होगे। दोनो का फ्रेक्चर हो गया है। वे लोग बिस्तर पर रहते है। तो तुम्हे तो कष्ट होगा ?''

मीनाने कहा ''आप सत्संगी होकर कैसी बात कर रहे है ?''

''मैं तो ऐसा मानती हूँ कि मेरे कृष्ण परमात्मा मेरी सेवा स्वीकार करने के लिये माता-पिता स्वरुप में आये है।

''इस समय कृष्ण मोर पंख और कस्तुरी लेकर हमारी सेवा लेने नही आ सकते है । समझे ? मुझे सेवा का अवसर मिला है। मीणा की यह उत्तम समझदारी है।

हम लोगो को महाराज शिक्षापत्री के गृहस्थो के लिये पाँचवे श्लोक में (शि. श्लोक-१३९) में कहे है। मामकै: अर्थात् जो मेरा है। हमे अपना मानता है। उसे अपने माता-पिता, गुरु और रोग ग्रस्त मनुष्य की जीवन पर्यन्त सेवा करने की आज्ञा दिये है।

एक गृहस्थ युवक से बात हुई । ''मंगला आरती में आते तो'' ? युवक ने कहा माता-पिता की सेवा करना। उनके पास बैठना यह मंगला आरती ही है ?''

शेष बोले ''मंगला में आये और माता-पिता की सेवा नही करे तो। यह क्या कहा जायेगा ?

सरकार को माता-पिता की सेवा के लिये नियम बनाना पड रहा है। समाज की यह कैसी दशा है । सरकार नियम बनाने जा रही है कि पीडित माता-पिता अपने सम्पत्ति से बेटे को बेदखल कर सकते है। कई माता-पिता बच्चे भरण पोषण का अधिकार माँग रहे है।

लेकिन, हम सभी सत्संगी को महाराज की आज्ञा है कि आचार्य, संत की आवाज है कि माता-पिता के सेवा का अवसर मिले तो हम भाग्यशाली है।

नये वर्ष का कैलेन्डर-दट्टा प्रकाशित हो गया है। शीघ्रता से ले ले।

अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव देश द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के आज्ञा और उनके द्वारा चयनित अलौकिक दर्शनीय सुंदर नये वर्ष का कैलेन्डर प्रकाशित हो गया है। अपने छोटे-बडे प्रत्येक मंदिर में इसी चित्रवाले (कोई परिवर्तन नही) इस मंदिर से मिलेगा। साथ में नये वर्ष का सुंदर दट्टा भी प्रकासित हो गया है। शीघ्र प्राप्त करले। मंदिर के जिन हरिभक्तो को कैलेन्डर बनाना हो। वह निम्न मोबाईल नंबर से सम्पर्क कर सकते है।

कालुपुर मंदिर - कोठार कार्यालय
बालु स्वामी मो. : ९४२७०७०३७१
सुरेशभाई मो. : ९१७३०८९०३०
जैमीनभाई मो. : ७९९०५१९४७८
कैलेन्डर का मूल्य रु।. ८-०० मंदिर के लिये

नरनारायण युवक मंडल
विपुलभाई मो. : ९७२५४४९२८८
प्रयागभाई मो. : ९४२९०६७४८४
विज्ञापन के लिये मूल्य रु।. १०-००

श्री स्वामिनारायण भगवान के चरण पावन प्रसादी के गाँव

पानसर

- अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से सडक द्वारा १ घंटे १० मिनट
- अहमदाबाद विमान अड्डे से ५० मिनट

उत्तर गुजरात में कलोल के पास पासनर गाँव स्थित है। यहाँ पर सुंदर हरि मंदिर है। श्रीजी महाराज के प्रसादी का गाँव है । सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान दंढाव्य देश के गाँव में विचरण करते हुए । वडु गाँव से हरिभक्तो को आनंद देते हुए । तथा मुमुक्षुओ को दर्शन देते हुए । पानसर गाँव आये थे । श्रीहरि का दर्शन करने के लिये लोग रास्ते के दोनो तरफ खडे होकर अभिवादन कर रहे थे। उस समय एक बैरागी बाबा भी थे । उस बैरागी बाबा को देखकर ग्राम जन बोले कि वैरागी बाबा का प्रताप श्री स्वामिनारायण भगवान में दिखाई देने लगा है । यह सुनकर बाबाने कहा कि मैं स्वामिनारायण के प्रताप को समझ लेता हूँ। इस प्रकार बाबा दौडकर ब्रह्मानंद स्वामी को देख बोला कि स्वामिनारायण आर है ? तब ब्रह्मानंद ने कहा कि स्वामिनारायण अभी पीछे आ रहे है। यह सुनकर बाबा रास्ते पर खडा रहा । सभी संत-भक्तो से पूछा कि आप स्वामिनारायण है। सभी ने उत्तर दिया कि स्वामिनारायण पीछे आ रहे है। इसके पश्चात् श्रीहरि आये। तभी बाबा ने श्री स्वामिनारायण भगवान के घोडे की लगाम पकडकर पूछा आप का नाम क्या है ? लगाम पकडते ही घोडा कूद गया। लेकिन बाबा स्वस्थ थे । वे लगाम को नही छोडे । भगवान घोडे के उपर से गिरते-गिरते बच गये। यह देखकर ५-१० पार्षद बाबा को छुडाने लगे। बाबाने घोडे की लगाम छोडी। पार्षदोने लम्बी दाढी वाले बाबा को दण्ड दिये । भगवान श्रीहरि बोले आप सभीने बाबा को कष्ट पहुचाया है। शायद मृत्य हो जाती तो इस राज्य में फाँसी होती । इससे अपना नाम खराब होता।

यह सुनकर ग्रामीणोने कहा कि हे भगवन इसमें आप का दोष नहीं है। और अंग्रेज लोग जानकार होते है। वे अन्याय नही करते है। और यह बाबा हम लोगो को प्रतिदिन गाली देता था । लेकिन बाबा समझकर हम सभी सहन करते थे। यह आज वह समझ कर आप से द्रोह करने आया था । उसे उसका फल मिल गया । ग्रामीणो से बात करके श्रीहरि वहाँ से ओला गाँव चले गये। पानसर की भूमि को महाराज पवित्र किये थे । उनके पुण्य प्रताप से आज भी पानसर गाँव में श्री नरनारायणदेव गद्दी के अर्न्तगत सुंदर श्री स्वामिनारायण मंदिर है। गाँव के भक्त गण दर्शन तथा भक्ति मार्ग अपनाकर धन्यता महसूस किये।

– शास्त्री स्वामी
नारायणवल्लभदासजी (वडनगर)

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

પ.પૂ.મોટા મહારાજશ્રી દ્વારા લેવાયેલ મ્યુઝિયમની તસવીર

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री महाविष्णुयाग की सूची-सितम्बर-२०२३

ता. ०८-०९-२०२३ प.भ.श्री रवजीभाई विरजीभाई पटेल – प्रगतिनगर – वर्त. अंकित तथा श्याम.

ता. ०९-०९-२०२३ प.भ.श्री गीरीशचंद्र मनुभाई जोषी – डांगरवा – वर्त. मुकेशभाई

ता. १०-०९-२०२३ श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज – महेसाणा – प्रे. महंत स्वामीश्री नारायणप्रसाददासजी.

ता. १७-०९-२०२३ प.भ.श्री जयकुमार शंकरलाल पटेल – मेमनगर.

ता. १९-०९-२०२३ श्री गणपतिजीनी समूह पूजन.

ता. २६-०९-२०२३ प.भ.श्री शांतिभाई अमरशीभाई मनाणी – जीरागढ–राजकोट – प्रे. हजूरी पार्षद वनराज भगत.

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में पंजीकृत श्री दान-भेट की सूची-सितम्बर-२०२३

रू।. १,०१,०००/- प.भ.श्री डाह्याभाई नारायणदास पटेल परिवार (माणसावाला) गुरुपूर्णिमा के अवसर पर

रू।. ५१,१११/- श्री स्वामिनारायण मंदिर रणजीतगढ (हलवद) प्रे. पू. भक्तिहरि स्वामी

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये – श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला ५/१०/२० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

સંપ્રદાયમાં એક માત્ર વ્યવસ્થા શ્રી સ્વામિનારાયણ મ્યુઝિયમમાં મહાપૂજા / મહાભિષેક નોંધાવવા સંપર્ક કરો.

મ્યુઝિયમ મોબાઈલઃ- ૯૮૭૯૫૪૯૫૯૭, પ.ભ. પરષોત્તમભાઈ - દાસભાઈ (બાપુનગર) : ૯૯૨૫૦૪૨૬૮૬

www.swaminarayanmuseum.org/com • email: swaminarayanmuseum@gmail.com

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा में (कालुपुर मंदिर हवेली) "ये कभी नही भूलना चाहिए कि हम शुध्ध ही है ।"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम सभी लोग जो यह सत्संग भजन जो कर रहे है। वह आने वाले जन्म की तैयारी के लिये कर रहे है। यह शरीर छोडकर दूसरी शरीर प्राप्त करने की तैयारी में है। मनुष्य मृत्यु प्राप्त करता है । उससे पूर्व कौन सी शरीर प्राप्त करेगा । यह लगभग निश्चित हो जाता है। या शरीर नही प्राप्त होगी । दूसरे जन्म की तैयारी कैसी होती है ? प्रत्येक व्यक्ति के इस जन्म के कर्मो पर आधारित होती है । हम जो कर्म करते है। उस पर से निश्चित होता है। अपने सद्‌गति होगी । या दुर्गति यह सबको ज्ञात हो जाता है। जो संसार का लगातार स्मरण करता है । वह बंधन की तैयारी करता है । संसार बंधन का कारण है । और जो सतत भगवान के नाम का स्मरण करता है। तो वह मुक्ति की तैयारी कर रहा है। जीव पृथ्वी पर जन्म लेता है। इस पृथ्वी पर बंधन में है। इस लिये वह जन्म लेता है। मुक्ति की तरफ जा सके । इस तरह के कर्म करे । इस लिये लगातार ईश्वर का स्मरण करना चाहिए । भगवान का सदैव स्मरणक रने का यह अर्थ नही है कि आप संसार से बाहर हो जाये। क्योकि ? हम सभी गृहस्थ है। तो कर्म तो करना ही पडेगा । भगवान यह नही कहे है कि लगातार मेरा ही स्मरणक रे । दूसरे अन्य कार्य को छोड दे । ऐसा भी नही करना चाहिए । प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी पूर्ण करनी चाहिए । भगवान के कृपा पात्र बने । अर्थात् हम जिस अवस्था में है । उसी में रहकर किसी जीव को कष्ट प्रदान नही करे । इस प्रकार का अच्छा जीवन व्यतीत करना चाहिए । घर में कई कार्य होते है। अलग-अलग प्रकार की जिम्मेदारीयाँ भी होती है । कोई विमार पडता है । तो उसकी सेवा भी करना पडता है। माला लेकर बैठ जाये। यह अच्छा नही लगता है । एक जीवको दुखी करके प्रभु को खुश करने जायेगे तो भगवान खुश नही होगे। कई लोग ऐसे होते है जिन्हे शास्त्र का ज्ञान नही होता है। और विद्वान भी नही होते है। लेकिन योगी-ज्ञानी की तरह श्रेष्ठ होते है। इस कलियुग के काल में माया के प्रभाव से जो हमसे जो खराब कर्म हो जाते है । उसका कारण क्या है ? हम सभी महाराज का आभार करना भूल जाते है। महाराज 'गवाह' रुप मं है। दृष्टा के रुप में है। यह भूल जाने पर ही गलत कर्म करते है। और हम जब लगातार भगवान की स्मरण करते रहते है तो इंद्रियाँ अपने आप भगवान की सेवा में लगी रहती है । उस समय हम सात्विक विचार करते है । वह कर्म इंद्रियो द्वारा अच्छा होता है । इंद्रियो को आदेश कौन देता है ? तो वह 'मन' है। और मन को आज्ञा कौन देता है। जब बुद्धि निश्चित कर लेती है तभी कोई कार्य करते है। अच्छे कार्यो से अपना चित्त शुद्ध होता है। तब ये श्रवण इंद्रियाँ संसार के प्रपंच को नही देखती है। और नही सुनती है। इस प्रकार अपने उपर कलियुग का ५०% प्रभाव कम हो जाता है। और दूसरा क्या करना है ? समर्पण वृद्धि रखकर प्रत्येक कार्य को भगवान के चरण में समर्पित कर देना चाहिए । और आगे जो कृत्य करना है। वह समझकर प्रभु को समर्पित करना चाहिए । तो हमसे गलत कार्य नही होगा ? क्योकि भगावन को जो अर्पण करेगे वह शुद्ध और सात्विक ही होगा । थाल शुद्‌ता से बनाकर रखते है। इतना तो ज्ञात ही है कि भगवान को अशुद्ध और अपवित्र वस्तु नही अर्पणक रते है। इस प्रकार कार्य भी

अपवित्र नही अर्पण करना चाहिए । जो मनुष्य 'देहात्मभाव' रखकर कार्य करता है। वह दु:खी रहता है। क्योकि ? यह कार्य इन्द्रियो के सुख के लिये करते है। इस लिये दु:ख प्राप्त होता है । और जो मनुष्य 'आत्मभाव' रखकर कार्य करता है। वह जगत के प्रति आशक्ति नही रखता है । ये लोग शारीरिक सुख नही देखते है । दु:ख आने पर दु:खी नही होते है। सुख आने पर हर्षित भी नही होते है। प्रत्येक अवस्था इस तरह के मनुष्य ''समभाव'' में रहते है । इनके अन्दर राग-द्वेष नही होता है । क्योकि ? आत्म भाव रखकर भगवान-स्मरण करते है। आत्मभाव वाले के लिये भजन स्मरण लगाम के रुप में होती है। जिस प्रकार अश्व को नियंत्रण करने के लिये मालिक के हाथ में लगाम होती है। इस प्रकार लोग यदि आत्मभाव में रहकर भजन-स्मरण भक्ति ढाल स्वरुप कार्य करती है। यह माया के सामने कार्य करता है। आत्मभाव में व्यक्ति की इंद्रियाँ नियन्त्रित रहती है। इससे जीवात्मा की शुध्धता बनी रहती है। और हम लोगो की 'जीवात्मा' शुद्द ही है। हमें यह ज्ञात नही होता है। क्योकि हम सब के भीतर शुभ और अशुभ कर्म अनादि काल से इकठ्ठा है। इस कारण से जीवात्मा की शुद्धता दबजाती है। जिस प्रकार मूल्यवान हीरा कीचड में दब जाने से वह चमकीला नही दिखाई देता है। कीचड से उसकी चमक समाप्त नही होती है। सफाई करने पर पुन: चमकीला दिखाई देने लगता है ।उसका मूल्य भी कम नही होता है। साक करने पर सब कुछ दिखने लगता है। ऐसे अपनी जीवात्मा भी शुद्ध है। क्योकि यह परमात्मा का अंश होती है। हमें मनुष्य योनि में जन्म लिया है । तो सभी कचरा साफ कर दे । तब शुद्द आत्मा बन जायेगी। उसका अनुभव भी लगने लगेगा। परमात्मा को समझ सकते है। परमात्मा के अलावा हमे कोई एक श्वास भी नही दे सकता है। परमात्मा को प्रत्येक जीवात्मा पसंद है। लेकिन भक्त अतिशय प्रिय लगता है। हम इस पृथ्वी पर जन्म लेकर चार वस्तु भय रुप में प्राप्त किये है। प्रथम जन्म दूसरी जवानी, तीसरा रोग, चौथी मृत्यु सबके लिये । यह बड़ा प्रश्न है। इस प्रश्न का उत्तर भगवान के पास हीहै । ये प्रश्न तो रहने वाले ही है। इन प्रश्नो के साथ जीवन कैसे बिताये ? भगवान ने इसका मार्ग बताया है। हम प्रभु के शरण में जाये। संसार नाशवान है। आत्मा अविनाशी है । प्रत्येक चेतन पदार्थ को प्रभु चेतना देतेहै । वह समझ सकता है। हम सभी अपने कर्मो के अनुसार अलग-अलग परिस्थिति से धिरे हुए है । अपने जीवन में कई समस्या आती है। उसके तारणहार भगवान ही है। तो आत्मभावी होकर सदैव स्मरण करते रहे । संसार का परित्याग नही करना चाहिए। हम सभी शुद्ध ही है। यह सदैव स्मरण रहे। क्योकि शुद्धता का अंश भी शुध्ध होता है । भगवान जितना कोई भी ब्रह्मांड में शुद्ध नही है। उसी शुद्दता के हम सभी अंश है। भगवान प्रत्येक जीव के प्रति प्रेम रखते है। भगवान 'प्रेमस्वरुप' है। आप सभी आत्मभाव से भक्ति करेगे। तो भगवान आप सभी के विपरीत समय से अच्छे से बाहर कर देगे।

भाद्र शुक्ल पक्ष-१५ पूनम सत्संग सभा, ठाकुरजी को थाल-संत पार्षदो, हरिभक्तो के रसोई के यजमान

(१) प.भ.अ.नि. जीवीबेन चंदुलाल भूदरदास पटेल परिवार (जामला) वर्त. श्री जगदीशभाई, श्री गौतमभाई (कनाडा) परिवार

(२) प.भ.अ.नि. मनजी मावजी राबडिया तथा मातृश्री कानबाई मनजी राबडिया, बालजीभाई करशन हिराणी, बालभाई बालजी हिराणी वर्त. भीमजी मनजी राबडिया तथा ध.प. जसोदाबेन भीमजी राबडिया - ह. पुत्री श्रेयस, आरशी और रेवती (बलदिया-कच्छ - सिडनी-आस्ट्रेलिया)

सत्संग समाचार

अहमदाबाद मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद एवम् अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी स.गु. शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्रावण कृष्ण पक्ष-८ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी ता. ७-९-२३ के दिन परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य एवम् मंदिर के प्रसादी चौक में विशाल स्टेज सामियाना में रात्रि ९ से १२ तक अपने प्रसिद्ध गायक कलाकार श्री जयेशभाई सोनी, ब्रह्मचारी स्वामी मुकुंदानंदजी और उनके साथी कलाकारोने कीर्तन एवम् भक्ति पूर्ण रास गरबा किये थे। हजारो हरिभक्त वर्षा में आकर महालाभ लिये थे। लगभग तीन घंटे तक भव्य उत्सवम नाया गया था।

सम्पूर्ण सुंदर प्रबन्ध अपने कथाकार संत पू. स.गु.शा. स्वामी रामकृष्णदासजी द्वारा किया गया था। जिस में पू. महंत स्वामी मंडल के संत पू. जे.पी. स्वामी, पू. बालु स्वामी, पू. भंडारी स्वामी धर्मस्वरुपदासजी आदि संत मंडल भी सेवा में जुडे थे। रात्रि १२ बजे लीला पुरुषोत्तम श्री कृष्ण भगवान के जन्मोत्सव की आरती उल्लासपूर्वक पूर्ण की गयी। पू. राम स्वामी अन्य संत में श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडल साथ बैठकर ओच्छव किये थे। सभी भक्तो को पंजीरी का प्रसाद बाँटा गया था। इस अवसर के यजमान का लाभ प.भ. ललिताबेन रसिकलाल भावसार - वर्त. व्रजेशभाई (न्यु राणीप-लांघणज) परिवारने किया था। (कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी)

अहमदाबाद मंदिर में जलझीलणी श्री गणपतिजीका वरघोडा

भगवान श्री स्वामिनारायण ने समप्रदाय में प्रचलित समैया की परम्परा में भाद्र पक्ष शुक्ल-११ जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी का वरघोडा आज भी श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर से उल्लास के साथ निकाला जाता है। ट्राफिक समस्या के कारण रास्ते में परिव्रतन हुआ था।

भाद्र शुक्ल पक्ष-४ श्री गणेश चतुर्थी के दिन अपने श्री नरनारायणदेव ओच्छव मंडलने विघ्नहर्ता श्री गणपतिजी दादा को नंदसंतो द्वारा रचित पदो से ठाकुरजी के सामने गान किया गया था।

जलझीलनी एकादशी के दिन दोपहर में १२ बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के देखरेख में संत-मंडल ओच्छव मंडल करते वाहन में बैठकर ठाकुरजी को नाव में नौकाविहार और प.प.पू. लालजी महराजश्री के करकमलो द्वारा अभिषेक आरती आदि की गई थी। लौटते समय भी मंदिरके चौक में ओच्छव किया गया था। हजारो की संख्या में हरिभक्त वरघोडा में भाग लेकर धन्य हुए। पू. महंत स्वामी शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन में सुंदर प्रबन्ध उनके संतो ने किया था। पू. महंत स्वामी की प्रेरणा से श्री गणपति पूजनके यजमान प.भ. हरि अशोकभाई पटेल (लंदन) जलझीलनी एकादशी के यजमान प.भ. मधुभाई गोरधनभाई लाठिया पुत्र प.भ. कार्तिक और पौत्र अगस्त्य ने लाभ लिया था। नारणघाट मंदिर में पू. महंत शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी ने सुंदर प्रबन्ध किया था। इस अवसर के यजमान प.भ.अ.नि. शिवाभाई माधवदास पटेल - ह. प.भ. अमृतभाई, प.भ. जयंतीभाई पटेल (विहारवाला) तथा प.भ. विष्णुभाई अंबालाल पटेल (चाँदखेडा) - ह. तपन और चिंतन आदि परिवारने लाभ लिया था। (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी)

अहम्दाबाद मंदिर में भाद्र शुक्ल पक्ष-१५ की सत्संग सभा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से प.पू. लालजी महाराजश्री के संकल्प से तथा कालुपुर मंदिर के पूज्य महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के सुंदर मार्गदर्शन से पीछले पाँच पूनम से अपने मंदिर के प्रसादी सभा मंडप में धर्मकुल की उपस्थिति में प्रातः ८-३० से १०-०० तक विद्वान संतो के वक्ता पद से पूर्ण हुआ था। शहर और गाँव के हरिभक्त कथा का सुंदर लाभ लेकर धन्य हुए। इस बार की सभा स.गु.शा. स्वामी श्री वासुदेवचरणदासजी (एप्रोच

महंतश्री) के वक्ता पद से पूर्ण हुई । जिसके यजमान प.भ.अ.नि. जीवीबेन चंदुलाल भूदरदास पटेल परिवार रहा था (जामला) वर्त. श्री जगदीशभाई गौतमभाई परिवारने भी लाभ उठाया था । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी)

अ.नि.स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी के गुणानुवाद वाली सभा

अडमदाबाद कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पूर्व महंतश्री और वर्तमान में कोटा (राज.) के महंत पू.स.गु. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी ता. २४-०८-२०२३ के दिन श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में और प.पू. बडे महाराजश्री और प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में पूर्ण हुई । इस में प.पू. बड़े महाराजश्री उनेक अवसरो को याद करके उन्हे श्रध्धांजली अर्पित किये थे । इसी प्रकार अहमदाबाद, मूली, भुज, वडताल, गढपुर, जुनागढ और धोलेरा देश के संत पू. महंत स्वामी प्रसंगानुसार गुणो को याद करके उनको भावांजलि अर्पित किये थे । प.पू. लालजी महाराजश्री के साथ के प्रवास को याद करके कृतज्ञताज्ञापित किये थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री टेलीफोन के माध्यम से श्रध्धांजलि दिये थे । अंत में पू. स्वामी के शिष्य मंडल पू. जे. पी. स्वामी, पू. योगी स्वामी, पू. भक्ति स्वामी और पू. विश्वविहारी स्वामी आदि के माध्यम से पू. शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी (मुनि स्वामी) पूरा धर्मकुल तथा दोनो देशो के संत-हरिभक्त आभार व्यक्त किये थे । पूरे सभा का संचालन पू. सगु.शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर गुरुकुल)ने सम्भाला था । (कोठारी स्वामी - कालुपुर मंदिर)

विसनगर में कथा पारायण

श्री नरनारायणदेव की परमकृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा कालुपुर मंदिर के पू. महंत स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी के प्रेरणा मार्गदर्शन से प.भ.अ.नि. कस्तुरचंद ललूभाई पटणी परिवार यजमान पद से श्री स्वामिनारायण मंदिर विसनगर के सुंदर आयोजन से पवित्र श्रावण मास में ता. १२-९-२३ से १६-९-२३ तक स.गु. भूमानंद स्वामी द्वारा रचित महान ग्रंथ श्री घनश्याम लीलामृत सागर की रात्रि यपंचान्ह पारायण सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कथाकार पू. स.गु. शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासकजी (कोटेश्वर) के वक्ता पद से संगीत के मधुर ध्वनि से पूर्ण किया गाय था । विसनगर के हजारो धर्मप्रेमी-कथा प्रेमी भक्तोने कथा का श्रवण किये थे । इस अवसर पर धामो से संत लोग आये थे । पूरे सभा का संचालन स.गु. शा. स्वामी व्रजवल्लभदासजी ने (मूली) किये थे ।(कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी - कालुपुर मंदिर)

श्री देवभूमि द्वारिका तीर्थ में श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण

परमकृलालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा पू. स.गु. शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी कोठारीश्री (कालुपुर मंदिर) की प्रेरणा से महान तीर्थ द्वारिका में ता. २३-०९-२०२३ से ता. २७-०९-२०२३ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल) महंतश्री के वक्तापद से पूर्ण हुआ । सभा का संचालन शा. स्वा. गोपालचरणदासजी (कलोल) सुंदर रुप से पूरा किये थे । (कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी - कालुपुर मंदिर)

उत्तराखंड के ऋषिकेश में कथा पारायण

सर्वोपरि आराध्यदेव श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री गिरनारी सेवा समिति बापुनगर अहमदाबाद द्वारा आयोजित अ.नि. संतोकबेन जीवणलाल कचराभाई पटेल परिवार (आजोल-अहमदाबाद) के यजमान पद से ता. २०-९-२३ से २६-९-२३ तक श्रीमद् भागवत कथा ज्ञानयज्ञ सम्प्रदाय के प्रसिद्ध कथावाचक संत स.गु. शा. स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर-गुरुकुल) के वक्तापद से ऋषिकेष धाम के बाबा कालीकमलीवाला आश्रम में पूरी गई थई । हजारो भाविक भक्तोने भगवान कथामृत का पान करके धन्य हुए । इस कथा के अवसर पर महंत शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (नारणघाट), कोठारी शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी (कोटा-कालुपुर) उपस्थित थे । पूरे सभा का संचालन शा. स्वा. व्रजवल्लभदासजी (मूली)ने

सम्भाला था ।(कोठारी शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी)

नारणपुरा (अहमदाबाद) मंदिर में पवित्र श्रावण मास में श्री भागवत पंचान्ह रात्रीय कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर-नारणपुरा मंदिर के महंत पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी तथा पू. महंत स.गु. शा. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी की प्रेरणा से स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में पवित्र श्रावण मास में ता. ११-९-२३ से ता. १५-९-२३ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह रात्रीय पारायण जेतलपुरधाम के युवा कथावाचक पू. स.गु. शा. स्वा. भक्तिनंदनदासजी के वक्ता पद से पूर्ण हुई । पूरा प्रबन्ध नारणपुरा मंदिर द्वारा किया गया था । पू. महंतश्री के.पी. स्वामी (जेतलपुरधाम), पू. महंतश्री वी.पी. स्वामी (नारणपुरा) के सुंदर मार्गदर्शन से नारणपुरा के हजारो हरिभक्त कथा सुनकर धन्य हुए । कथा के मध्य धामो से संत भी पधारे थे । (शा.स्वा. जगतप्रकाशदासजी - जेतलपुरधाम)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षदकालोनी द्वारा सत्संग के क्रिया-कलाप

श्री नरनारायणदेव की परम कृपा से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा के साथ पूरे समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से प.भ. श्रीदासजी के मार्गदर्शन से तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के प्रबन्ध से सत्संग के क्रिया-कलाप किये गये थे ।

ता. ३-९-२३ से ५-९-२३ स.गु. शा. स्वामी व्रजभूषणदासजी (गांधीनगर) के वक्तापद से धर्मादा के निमित्त रात्रि कथा की गयी थी ।इस अवसर पर नूतन निकोल मंदिर जमीन संपादन फंड में हर्षद कालोनी सत्संग समाज द्वारा दो करोड रुपये की बात की गयी है । स.गु. महंत स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (कालुपुर) प्रत्येक दाता को यथोचित सन्मान करके आशीर्वाद दिये थे । ता. ७-९-२३ को कथा, कीर्तन-भक्ति, रासोत्सव तथा प्रागट्य आरती साथ जन्माष्टमी मनाई गयी थी ।

पवित्र श्रावण महीने में ठाकुरजी को कई कलात्मक हिंडोला में झुलाया गया था ।

ता. १९-९-२३ से २५-९-२३ तक श्री गणपतिजी महोत्सव तथा हिमालय दर्शन का प्रबन्ध किया गया था । प्रतिदिन रात को आथी तथा रासोत्सव किया गया था । बहनो के द्वारा चुरमा के लड्डू का थाल तथा अन्नकूट किया गया था।

गोरधनभाई वी. सीतापरा के संचालक पद से सप्ताह तक बाल सभा बच्चे ता. २७-८-२३ से कालुपुर मंदिर के पदयात्रा में जुडकर देव का दर्शन करके कई बच्चे प.पू. लालजी महाराजश्री के हाथो द्वारा शरणागति की कंठी पहनाकर फोटो सेशन किया गया था । ता. २४-९-२३ को ३५ बालको ने श्री स्वामिनारायण म्युजियम का दर्शन करके प.पू. बड़े महाराजश्री का आशीर्वाद लेकर फोटो सेशन करके कई बच्चे शरमागति की कंठी धारण किये थे ।

बहनो के मंदिर में बहनोने चातुर्मास के प्रारम्भ से १ घंटे धुन गाये थे । ता. १५-९-२३ को अखंड ६ घंटे का धुन पूर्णाहुति किये थे ।

युवक मंडल द्वारा लगातार प्रत्येक एकादशी की रात्रि में धुन-कीर्तन का प्रबन्ध किया जाता है ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल द्वारा सत्संग के क्रिया-कलाप

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल के महंत स्वामी के मार्गदर्शन से श्रावण मास में ठाकुरजी के समक्ष अनेक प्रकार का हिंडोला, हिमालय, पुल्हाश्रम आदि का दर्शन कराया गया था । प्रत्येक रविवार को बाल सभा रखी गयी थी । अगल-बगल तथा बावला के पास मोगलधाम में ता. २० अगस्त को सत्संग सभा की गयी थी । श्रीकृष्ण जन्मोत्सव उल्लासपूर्वक मनाया गया था ।इस प्रकार बोपल मंदिर में ध्यानप्रिय स्वामी और संत मंडलने सुंदर सत्संग किये थे । हरिभक्तोने लाभ उठाये थे ।(प्रविण उपाध्याय)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हिम्मतनगर

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा तथा यहाँ के महंत शा. प्रेमप्रकाशदासजी के मार्गदर्शन से यहाँ अधिक मास में सुंदर हिंडोला और भागवत कथा का प्रबन्ध किया गया था । प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की आज्ञा से श्रावण मास में बहनो को कथा की गयी थी ।इस में जेतलपुर मंदिर से सांख्ययोगी नर्मदाबा अपने मंडल के साथ पधारी थी । सभी ने कथा का

लाभ उठाया था। समूह महापूजा का प्रबन्ध किया गया था। युवक मंडल और महिला मंडलने सुंदर व्यवस्था किये थे। (स्वा. हरिकेशवदास)

न्यु राणीप मंदिर में श्री भक्तिचिंतामणी की कथा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा एवम् पूरे धर्मकुल के आशीर्वाद से अहमदाबाद मंदिर के महंत पू. स.गु. शा. स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण कष्टभंजनदेव मंदिर न्यु राणीप के अच्छे प्रबन्ध से पवित्र चातुर्मास में ता. ११-९-२३ से ता. १५-९-२३ तक श्री भक्ति चिंतामणी के अर्न्तगत परचा प्रकरण की रात्रीय पंचान्ह पारायण स.गु. शा. स्वा. सुव्रतस्वरुपदासजी (कालुपुर) के वक्ता पद से पूर्ण की गयी। यहाँ के हरिभक्तो ने सुंदर लाभ उठाया था।(कोठारी श्री न्यु राणीप)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर श्री गणपतिजी का वरघोडा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आज्ञा वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में भाद्रपक्ष शुक्ल पक्ष एकादशी जलझीलणी एकादशी श्री गणपति का वरघोडा धुन, भजन, कीर्तन किया गया था । पू. महंत शा. स्वामी नारायणवल्लभदासजी, कोठारी शा. स्वा. विश्वप्रकाशदासजी आदि संत-मंडल और विशाल हरिभक्त समूह में नागधारा सरोवर में ठाकुरजी का जलाभिषेक कराके प्रसाद बाँटे थे। मंदिर के ट्रस्टी, जयेशभाई शास्त्री और रतिलाल व्यासने लाभ उठाया था।(कोठारी वडनगर मंदिर)

सुरत में प.पू. लालजी महाराजश्री के अध्यक्षपद से शिबिर

सुरत शहर में मूली प्रान्त के हालार तथा उत्तर गुजरात के कई हरिभक्त जो वर्षो से वहाँ पर स्थायी है। काफी समय से प.पू. लालजी महाराजश्री से प्रार्थनाकर रहे थे। रांदेर क्षेत्र में अपने हरिभक्त निवास करते है। उन्हे एक सत्संग शिबिर आयोजित करना है । जिसके कारण प.पू. लालजी महाराजश्री ता. २३ सितम्बर २३ को संत-पार्षद मंडल के साथ सर्व प्रथम सुरत पधारे थे। विशाल सुंदर हाल में प.पू. लालजी महाराजश्री के सानिध्य में अहमदाबाद मूली मंदिर के महंत स्वामी आदि प.पू. लालजी महाराजश्री की अनेक प्रकार की प्रवृत्ति शिबिर से सभी भक्तो को श्री नरनारायणदेव को केन्द्र में रखकर क्रियाशील होकर कार्य करने को प्रेरित किये। अंत में प.पू. लालजी महाराजश्री अधिक खुश होकर संतो से बोले यहाँ पर सभा करे। तथा सभी को आशीर्वाद दिये थे। सभा का संचालन शास्त्री स्वामी भक्तिनंदनदासजी (मूली)ने सुंदर रुप से किये थे। (कोठारी शा. मुनि स्वामी - कालुपुर)

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव आदि देवो की थाल-रसोई की सूची

थाल का विवरण	रसोई	
चुरमाकालड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मगशका लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
बूंदी के लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मोतीचूर के लड्डू	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मोहनथाल	रु. २,०००/-	रु. १०,०००/-
मगशपूरी	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
मालपूवा	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
खीरपूरी	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
अडदिया का थाल	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
साटा का थाल	रु. २,५००/-	रु. १५,०००/-
शीखंड पुरी	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
ड्रायफ्रुट हलवा	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
बासुंदी पुरी	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
खीर-मालपुवा	रु. ३,५००/-	रु. २०,०००/-
गुलाब जामुन	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
जलेबी	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
मैसुब	रु. ४,०००/-	रु. २०,०००/-
काजू-बदाम मैसुब	रु. ५,०००/-	रु. २०,०००/-
सत्तरधाम का थाल	रु. ३,०००/-	
स्थायी सुरक्षित थाल		**रु. १0,000/-**
स्थायी सुरक्षित थाल (सांजमे)		**रु. ५,00१/-**

ठाकोरजी को शायं का थाल रु. १000/-

Mo. : 8238001666

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

श्रावण सुद-१ प.भ.अ.नि. कमलाबेन अंबालाल पटेल (मोटेरा), प.भ. तन्वीबेन रमेशभाई (झुंडाल), प.भ. सविताबेन रमणभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पृथ्वी, मृदा सुरेशभाई पंचाल (अहमदाबाद), प.भ. नेहाबेन तुषारकुमार पटेल (कारवण), प.भ. अंकिताबेन जतीनकुमार पटेल (लींबासी), प.भ. तेजस चौहाण (गांधीनगर), प.भ. कविता केशुभाई कोलडीया (नारदीपुर), महिला मंडल बजरंगपुरा, प.भ. रतनबेन नानजीभाई हिराणी (भुज-कच्छ), प.भ. सुरेशभाई अमृतभाई प्रजापती (महेसाणा). **श्रावण सुद-२** प.भ. मनुभाई मोहनभाई पटेल (अहमदाबाद). **श्रावण सुद-३** प.भ. लीलाबेन रमेशकुमार पटेल (गांधीनगर), प.भ. गीताबेन दिलीपभाई (अहमदाबाद), प.भ. बलदेवभाई जमनादास पटेल (डांगरवा), प.भ.अ.नि. विश्रामभाई करशनभाई गोरसीया (बलदीया-कच्छ), प.भ. पर्णबेन धवलभाई सोनी (नाईरोबी). **श्रावण सुद-४** प.भ. महेशभाई डाह्याभाई पटेल (पोर), प.भ.अ.नि. ललीतभाई व्रजलाल पाटडीया (अहमदाबाद), प.भ. हर्षदभाई दलसुखभाई पटेल (मेडा), प.भ. ईन्द्रवदन ईश्वरभाई पटेल (आंत्रोली), प.भ. कुमकुमबेन मणीलाल पटेल (नरोडा), प.भ. गोमतीबेन मगनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. जीज्ञेश नविनचंद्र पटेल, प.भ.अ.नि. धवलभाई वी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. पटेल विष्णुभाई मणीभाई (बीलासीया), प.भ. अमृतभाई भगाभाई पटेल (गांधीनगर). **श्रावण सुद-५** अल्ट्रासी आर्किटेकचर प्रोडर्स (अहमदाबाद), प.भ. विष्णुभाई पी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. कंचनबेन हरजीभाई पटेल (नारणपुरा), प.भ. विनोदभाई पी. पटेल (उमेदगढ), प.भ. निरंजनभाई बी. पंचाल (अहमदाबाद), प.भ. कांताबेन भगवानभाई पटेल (गोठीब), प.भ. छोटाभाई डाह्याभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. चंचलबेन परसोमतभाई पटेल (संतरामपुर), प.भ. शरतनभाई सोमाभाई नायक (गांधीनगर), प.भ. रूचीबेन जयभाई पटेल, प.भ. भरतभाई उपाध्याय (विरसद), प.भ. सुरेशभाई बाबुलाल अग्रवाल (अहमदाबाद), प.भ. नीताबेन गीरीशभाई ठक्कर (अहमदाबाद), प.भ. सागरभाई पी. सोनी (अहमदाबाद). **श्रावण सुद-५** प.भ. रामभाई गोविंद वरसाणी (मानकुवा-कच्छ), प.भ. अमृतभाई अंबालाल एस. पटेल (वडु), प.भ. मणीबेन प्रविणभाई नाथुभाई चौधरी (ईन्द्रपुरा). **श्रावण सुद-६** श्री सहजानंद कन्स्ट्रकशन कां. (मांडवी-कच्छ). **श्रावण सुद-७** श्री हरिकृष्ण ईन्स्फ्राट्रकचर (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. रणछोडभाई प्रभुदास पटेल (साबरमती). **श्रावण सुद-८** प.भ.अ.नि. मेघजी लालजी वेकरीया. **श्रावण सुद-९** प.भ. जगदीश मावजी भूडीया, प.भ.अ.नि. रामजीभाई श्यामजी केराई (रामपर-वेकरा-कच्छ), प.भ. प्रविणभाई मनीषभाई, जल्पाबेन, चंपाबेन (डांगरवा पलीयड). **श्रावण सुद-१०** प.भ. कुश केतन पटेल (अमेरिका), प.भ.अ.नि. विमळाबेन कचराभाई पटेल (कणभा), प.भ. नागरभाई ईश्वरभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. लीलाबेन गोरधनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. बाबुभाई मणीलाल पटेल (अहमदाबाद), प.भ. विमलाबेन रावजीभाई पटेल (मोटेरा), प.भ.अ.नि. संगीताबेन घनश्यामभाई (उनावा). **श्रावण सुद-११** प.भ. शांताबेन लालजीभाई वागडीया (केरा-कच्छ), प.भ.अ.नि. शंकरभाई नारणदास पटेल (राणीप). **श्रावण सुद-१२** प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. परेश जयंतीलाल चुडासमा (जामनगर), प.भ. ज्योतिबेन देवेन्द्रभाई पटेल (उनावा), प.भ. हेनिल, निरव कोकीलाबेन महेशभाई (गांधीनगर), प.भ. चंद्रिकाबेन एन. महेता (अहमदाबाद), अ.नि. पू. स.गु. स्वामीश्री प्रेमस्वरूपदासजीनी त्रियोदशा निमित्ते (अहमदाबाद मंदिर), प.भ. किशन एच. गज्जर (अहमदाबाद), प.भ. सूर्याबेन भरतकुमार पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. विठ्ठलदास भावसार (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. कल्याण रामजी हिराणी (रामपरवेकरा-कच्छ), प.भ. मफतभाई कचराभाई पटेल (पोर), प.भ.अ.नि. संगीताबेन घनश्यामकुमार पटेल (उनावा), प.भ. योगेशकुमार शनाभाई मोदी (अहमदाबाद). **श्रावण सुद-१३** प.भ. जानकीबेन संजयभाई पोठीया (निकोल), प.भ. भार्गव कौशिकभाई ठक्कर (बोपल). **श्रावण सुद-१४** प.भ. भूमिबेन घनश्यामभाई पटेल (खांधली), प.भ.अ.नि. चौधरी लवजीभाई महादेवभाई (बालवा), प.भ. जयेशकुमार रणछोडभाई पटेल (सूकाटींबा), अ.नि. पू. स.गु. स्वा. निष्कामचरणदासजीनी पुण्य स्मृति अर्थे (भुज-कच्छ), अ.नि.स.गु. स्वा. निष्कामचरणदासजीनी पुण्य स्मृति अर्थे (भुज-कच्छ) - ह. मावजी करशन भुडीया, भीमजी शिवजी भुडीया, गं.स्व. कमलाबेन डी. पटेल (अहमदाबाद), प.भ. धनगौरीबेन बाबुभाई पटेल (लतर), प.भ. जडीबेन परसोतमदास पटेल (अहमदाबाद). **श्रावण सुद-१५** प.भ.अ.नि. धनजी वालजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ.अ.नि. कमलाबेन धूळाभाई पटेल (माणसा), प.भ.अ.नि. आत्मारामभाई छगनदास पटेल (वडु), प.भ.अ.नि. शर्मिष्ठाबेन हरिशभाई पटेल (अहमदाबाद), महिला मंडळ काळीगाम-साबरमती.

श्रावण वद-२ प.भ.अ.नि. परसोतमभाई प्रभुदास (प्रांतीया), प.भ. प्रकाशचंद्र एच. सोनी (अहमदाबाद), प.भ. स्नेहलताबेन जीतेन्द्रभाई सोनी (अहमदाबाद), प.भ. पुष्पाबेन कांतिलाल पटेल (देलवाडा). **श्रावण वद-३** सत्संगीबहेनो (हवेली कालुपुर), प.भ. जस्मिनभाई मुकेशभाई पटेल (मारूसणा). **श्रावण वद-४** निरामय आंखकी होस्पिटल - ह. डॉ. अंकित भावसार (अहमदाबाद), प.भ. मनसुखभाई ठाकरसीभाई पटेल (नवा नरोडा), प.भ. प्रविणभाई विठ्ठलदास पटेल (मोसण), प.भ. रामचंद्र अमृतलाल पटेल (नरोडा),

अहमदाबाद मंदिर में श्री ठाकुरजी का थाल तथा संतवर्णी पार्षदो की रसोई देने वालो की सूची

प.भ. राणाभाई दयाराम जोशी (उंझा), प.भ. बिपीन नटवरलाल ठक्कर (वासणा), प.भ. सी.एम. पटेल परिवार (साबरमती), प.भ. अशोकभाई बी. चौधरी (बालवा), प.भ. मेहुलभाई प्रविणचंद्र प्रजापति (नरोडा), प.भ. प्रभाबेन मगवभाई देसाई (निकोल), प.भ. भद्रेशभाई मगनभाई देसाई (निकोल), प.भ. हिराभाई सागरभाई ठक्कर (थलतेज), प.भ. तेजेशकुमार मगनभाई पटेल. **श्रावण वद-५** प.भ. माहिर शाह(अहमदाबाद), प.भ. जीतुभाई भावसार (अहमदाबाद). **श्रावण वद-६** प.भ. प्रविणचंद्र रणछोडभाई राठोड (जुनागढ), प.भ. सोमबाई तथा वेलजी प्रेमजी वरसाणी (मानकुवा-कच्छ). **श्रावण वद-७** प.भ. साहिल योगेशकुमार पटेल (चांदेडा), प.भ. दामजीभाई माधवजीभाई राठोड (जामसर). **श्रावण वद-८** प.भ. धीरूभाई रावजीभाई सेलडीया (सुरत), प.भ. तीर्थ अश्विनभाई पटेल (अहमदाबाद). **श्रावण वद-९** प.भ.अ.नि. रमेश लालजी वरसाणी (सुपर-कच्छ), प.भ. विधिबेन गाबाणी (खोपाळा), प.भ.अ.नि. लालजी रमेश हालाई (मिरजापर-कच्छ), प.भ. तेजेशभाई मगनभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. लालजी गांगजी खीमाणी (कच्छ-भुज), प.भ. धर्म समीर पटेल (अहमदाबाद), प.भ.अ.नि. हरजीभाई खीमजीभाई छबाडीया (रामपर-कच्छ). **श्रावण वद-१०** चि. खुशी धीरजभाई चि. निहाल कानजी हिराणी (भुज-कच्छ), प.भ. मणीभाई चतुरभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. मुकेशभाई हरजीभाई माणीया, प.भ. घनश्यामभाई ए. पटेल (करजीसण). **श्रावण वद-११** प.भ. लालजी धनजी वेकरीया (मांडवी-कच्छ), प.भ. विशाल रमेशभाई सावलीया (नवसारी). **श्रावण वद-१२** प.भ. मंजुलाबेन दशरथभाई पटेल (वडुवाळा), सुवासीनी महिला मंडळ(गोधरा), प.भ. नर्मदाबेन जयंतीभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. संजयभाई चिमनभाई पटेल (झुंडाल), प.भ. भाविकाबेन हितेशभाई पटेल (दिल्ही), प.भ.अ.नि. माणेकलाल वी. भावसार (अहमदाबाद), प.भ. धूळाभाई गिरधरभाई पटेल (सलाल), प.भ. भगवानभाई नारणभाई पटेल (नरोडा), प.भ. रमेशभाई रणछोडभाई मारफतीया (अहमदाबाद), प.भ. शिल्पाबेन सौमिलभाई शाह (पालडी), प.भ. नटवरभाई कचराभाई पटेल (भाणपुर), प.भ. संदिपभाई अमृतभाई पटेल (वडु), प.भ. देव्यानीबेन भरतभाई पटेल (गवाडा), प.भ. ईलाबेन, कैलाशबेन, गीताबेन (साबरमती), प.भ. मनजी शिवजी हिराणी (नारायणपर-कच्छ), प.भ. नरेशभाई परबतभाई सिंधव (मालणपुर). **श्रावण वद-१३** प.भ. वासु मथुरभाई जोगाणी (निकोल), अ.नि. पू. स.गु. स्वामी वासुदेवचरणदासजी (कालुपुर मंदिर), पू. स.गु. स्वा. रूषिकेशदासजी (वडताल), प.भ. गजेन्द्रप्रसाद विठ्ठलदास शाह (अहमदाबाद), श्रीजी मंडळ (राणीप). **श्रावण वद-१४** अ.नि. स.गु. पू. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी त्रयोदशा निमित्ते - शिष्य मंडळ कालुपुर मंदिर. **श्रावण वद-३०** प.भ.अ.नि. रेवाबेन मनजीभाई पटेल (गोठीब), प.भ. गोविंदभाई बाभईदास पटेल (गवाडा), प.भ. दिलीपभाई मोहनभाई पटेल (लसुन्द्रा), प.भ. सोलंकी प्रभुभाई राणाभाई (वणी), प.भ. कोकीलाबेन विनोदभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. चारूमती गीरीशभाई पटेल (डिंगुचा), प.भ. परसोतमभाई भीखाभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. श्रेया विरेन्द्रभाई पटेल (अहमदाबाद), स.गु. महंत शा. स्वा. नारायणमुनिदासजी (कोटा), प.भ. रंजनबेन बाबुभाई पटेल (अहमदाबाद), प.भ. दिपकभाई शांतिभाई र (बलोल-भाल), प.भ. प्रविण बी. पटेल (अहमदाबाद).

अक्षरवास

श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) के संत पूज्य स.गु. पुराणी स्वामी स्वयंप्रकाशदासजी गुरु स.गु. स्वामी मुरलीमनोहरदासजी (उम्र ७९ वर्ष) श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए। दिनांक २०-०९-२०२३ के दिन अक्षरनिवासी हुए है। ऐसे संत के अक्षरनिवासी होने के कारण भुज (कच्छ) के सत्संग समाज की बड़ी क्षति हुई है।

बलदिया (कच्छ) : श्री नरनारायणदेव देश के अति निष्ठावान सेवा मूर्ति, दानवीर और सदैव भगवान श्रीहरि के मूर्ति में निर्मग्न रहने वाले धर्मकुल और संतो के प्रिय ऐसे प.भ. श्री लक्ष्मणभाई भीमजीभाई राघवाणी (उम्र ९४ वर्ष) दिनांक २१-०९-२०२३ भाद्र शुक्ल पभ-५ बुधवार को श्रीहरि का अखंड भजन करते हुए अक्षरनिवासी हुए है। अक्षरवास के एक दिन पूर्व अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का संतो के साथ समाचार पूछने भुज आये थे। अन्त में धर्मकुल का दर्शन किये। ऐसे निष्ठावान, एकांन्तिक भक्त सम्प्रदाय के लिये बडी कमी के रुप में होते है।

Printed and Published by **Shastri Swami Purushottamprakashdasji** on behalf of **Shree Swaminarayan Temple** and Printed at **Asian Printery**, Near Talati Hall, Raipur, Ahmedabad-380001.
Editor : Shastri Swami Purushottamprakashdasji

अहमदाबाद मंदिर में जन्माष्टमी के अवसर पर कृष्ण जन्मोत्सव की आरती तथा चौक में रास गरबा करते हुए हरिभक्त।

प्रत्येक पूनम को अहमदाबाद मंदिर में मनाई जाने वाली सभा में सभी को दर्शन देते प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री।

अहमदाबाद मंदिर में भूतपूर्व महंत अ.नि. शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी के गुणानुवाद सभा में स्वामी के साथ संस्मरण को बताते और श्रद्धांजलि व्यक्ति करते प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री और दोनो देश के संत।

नारणपुरा मंदिर में जलझीलणी उत्सव तथा रात्रीय पारायण में कथा श्रवण करते हरिभक्त।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023

बोल्टन (यु.के.) मंदिर के ५० वाँ पाटोत्सव के अवसर पर सभा में दर्शन देते पूरे धर्मकुल।

અમદાવાદ શ્રી નરનારાયણદેવના શુભ સાનિધ્યમાં
પ.પૂ.ધ.ધુ. આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીનો

૫૧મો પ્રાક્ટ્યોત્સવ

આસો સુદ-૧૦ (વિજયા દશમી) તા. ૨૪-૧૦-૨૦૨૩ મંગળવાર

॥ કાર્યક્રમ ॥

મંગળા આરતી : સવારે ૫-૩૦ કલાકે ● શણગાર આરતી ૮-૦૫ કલાકે
આચાર્ય મહારાજશ્રીનું પૂજન અર્ચન તથા પ્રાકટ્યોત્સવ સભા : ૮-૧૫ થી ૧૦-૩૦ કલાક સુધી
ત્યારબાદ મહાપ્રસાદ

॥ યજમાન ॥
અ.નિ.પિતાશ્રી શિવજીભાઈ મેઘજી હિરાણી
ગં.સ્વ.માતૃશ્રી અમરબાઈ શિવજી હિરાણી (નારણપર,કચ્છ)
મનજીભાઈ શિવજી હિરાણી ● વનિતાબેન મનજી હિરાણી
દિકરી રેશ્મી હિરાણી
પુત્ર ભાવિન મનજી હિરાણી ● પુત્રવધુ મુક્તિ ભાવિન હિરાણી
પૌત્ર ઈશાન ભાવિન હિરાણી હ્યુસ્ટન, ટેક્સાસ, યુ.એસ.એ.

અમદાવાદ કાલુપુર મંદિરમાં

પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી તથા
ભાવિ આચાર્ય શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીના સાનિધ્યમાં

શરદોત્સવ

આસો સુદ-૧૫ (શરદ પૂનમ)
તા. ૨૯-૧૦-૨૦૨૩ રવિવાર

॥ કાર્યક્રમ ॥

કીર્તન ભક્તિ - રાસ - ગરબા સમય : રાત્રે ૮:૩૦ થી ૧૧:૦૦ કલાકે
પૂરવ પટેલ અને સાથી કલાકારો ત્યારબાદ પૌઆપ્રસાદ

॥ યજમાન ॥
અ.નિ.કાંતાબેન ચુનીલાલ સોની પરિવાર
(પલીયડવાળા)રાણીપ, અમદાવાદ
હ.જયેન્દ્ર ચુનીલાલ સોની ● પાર્થ જયેન્દ્ર સોની ● મીત જયેન્દ્ર સોની

આયોજક :- સ.ગુ. મહંત શાસ્ત્રી સ્વામી શ્રી પુરૂષોત્તમપ્રકાશદાસજી (પી.પી.સ્વામી)

પ.પૂ.ધ.ધુ.આચાર્ય ૧૦૦૮ શ્રી કોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની તથા
પ.પૂ.ભાવિ આચાર્ય ૧૦૮ શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી

શ્રી સ્વામિનારાયણ મંદિર, કાલુપુર દ્વારા
વર્ષ ૨૦૨૩-૨૪ના આકર્ષક કેલેન્ડર
ટૂંક સમયમાં પ્રકાશિત કરવામાં આવશે.

પ.પૂ.આચાર્ય મહારાજશ્રીની આજ્ઞાથી
શ્રી નરનારાયણદેવ દેશના તમામ મંદિરોએ
આ જ કેલેન્ડર પ્રકાશિત કરવાનાં રહેશે

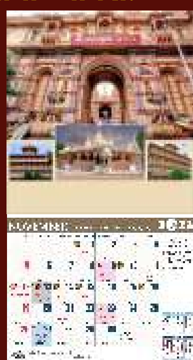

શિખરબધ્ધ અને હરિમંદિર માટે
કિંમત રૂા.8/-(રાહતદરે)
સંપર્ક
બાલુ સ્વામી 9427070371 ● સુરેશભાઈ 9173089030

આપના બીઝનેસની એડવર્ટાઈઝમેન્ટ માટે
કિંમત રૂા.10/-(રાહતદરે)
સંપર્ક
પ્રયાગ પટેલ 9429067584 ● વિપુલ પટેલ 9725449288

મીનીમમ ૩૦૦ કેલેન્ડર બનાવી આપવામાં આવશે.

prafulkharsani@gmail.com